विचार बिन्दु

मनस्वी पुरुष पर्वत के समान ऊँचे और समुद्र के समान गंभीर होते हैं। उनका पार पाना कठिन है। –माघ

हिमाचल की गोद में एक रोमांचक यात्रा

हिमालय की दुर्गम चोटियों और बर्फीली घाटियों की ओर जाने का विचार ही हमें उत्साह से भर देता है। इस बार, मैंने और मेरी पत्नी पुष्पा पाण्डेय ने हिमाचल प्रदेश के लाहौल और स्पीति की यात्रा का फैसला किया। हमारे साथ इस यात्रा में हमारा बेटा पुष्प दीप पाण्डेय भी था, जो अपनी मोटरसाइकिल पर 2200 किलोमीटर की साहसिक यात्रा पर निकला। इस यात्रा में न केवल हिमालय की अद्वितीय सुंदरता को देखने का अवसर था, बल्कि इस क्षेत्र के अनूठे पर्यावरणीय, सामाजिक और सांस्कृतिक पहलुओं से भी रूबरू होना था।

जैसे ही हम शिमला की ठंडी हवा और देवदार के पेड़ों के बीच से गुज़रे, मन में रोमांच की एक लहर सी दौड़ गई। शिमला का घना जंगल, जिसमें देवदार, ओक और चीड़ के पेड़ होते हैं, यहाँ के वातावरण को शीतलता और हरियाली से भर देता है। लेकिन जैसे-जैसे हम आगे बढ़ते गए, इस हरियाली का स्वरूप धीरे-धीरे बदलने लगा। देवदार और ओक के पेड़ों की जगह फर और चीड़ के पेड़ों ने ले ली। यह परिवर्तन ऊँचाई का संकेत था, जहाँ जीवन की परिस्थितियाँ और भी कठिन हो जाती हैं।

शिमला से आगे बढ़ते हुए, करीब 100 किलोमीटर के बाद हमें सेब के बागान दिखाई देने लगे। ये बागान हिमाचल प्रदेश की अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार हैं। लेकिन इन बागानों के बीच भी हमें यह महसूस हुआ कि जलवायु परिवर्तन के कारण यहाँ के किसान मुश्किल दौर से गुज़र रहे हैं। सेब की खेती में चुनौतियाँ बढ़ती जा रही हैं, फिर भी किसानों का आत्मविश्वास और उनकी मेहनत हमें प्रेरित करती रही।

जैसे ही हम पूह की ओर बढ़े, सेब के बागानों ने हमें अपनी सुंदरता से मंत्रमुग्ध कर दिया। पिछली यात्रा में हमने देखा था कि हर पेड़ सेबों से लदा हुआ है, और उनकी लालिमा सूरज की किरणों में चमक रही है। यहाँ के किसान हमें बताते हैं कि हिमाचल प्रदेश भारत के कुल सेब उत्पादन का लगभग 30 प्रतिशत योगदान देता है। लेकिन बेमौसम बारिश और ओलावृष्टि ने फसल की गुणवत्ता को प्रभावित किया है। इस बार की यात्रा में हमने फूलों से लदे सेव के बागान देखे। मज़ा आ गया।

किसानों ने हाई-डेंसिटीप्लांटेशन और ड्रिपइरिगेशन जैसी तकनीकों का उपयोग कर उत्पादन में सुधार किया है। जब हमने इन किसानों से बात की, तो उनकी चुनौतियों और उनके प्रयासों को सुनकर हम समझ पाए कि इस लाल सोना को उगाने में कितनी मेहनत और धैर्य लगता है। लेकिन इस बीच, बादलों ने आसमान को घेर लिया और अचानक बारिश शुरू हो गई, जिसने हमारी यात्रा को और भी रोमांचक बना दिया।

पूह में रुककर हमने हिमाचल के स्थानीय व्यंजनों का स्वाद लिया। थुकपा (नूडलसूप) की गर्माहट और मोमोज़ का अनोखा स्वाद ठंडी हवा में बहुत सुकूनदेह था। साथ ही, हमें चंग (तिब्बती बीयर) का स्वाद भी मिला, जो यहाँ की ठंडी जलवायु में शरीर को गर्म रखने का एक पारंपरिक तरीका है।

हमारी यात्रा का सबसे रोमांचक हिस्सा तब शुरू हुआ, जब हम लाहौल और स्पीति घाटियों में प्रवेश करने लगे। चंद्रा और भागा नदियों का साथ हमें उनके बहाव की शक्ति और सुंदरता से रूबरू कराता रहा। चंद्रा और भागा नदियाँ तांदी में मिलकर चंद्रभागा (चेनाब) नदी का निर्माण करती हैं, जो आगे जम्मू और कश्मीर की ओर बहती है। इन नदियों का प्रवाह उन कठिनाइयों का प्रतीक था, जिनका सामना यहाँ के लोग हर दिन करते हैं।

स्पीति नदी, जो इस क्षेत्र की जीवनरेखा है, अपनी शांत धारा के साथ बहती हुई स्पीति घाटी को सींचती है। लेकिन इन नदियों का पानी भी जलवायु परिवर्तन के कारण प्रभावित हो रहा है। ग्लेशियरों के पिघलने की दर में वृद्धि और बर्फबारी में कमी ने इन नदियों के प्रवाह को कम कर दिया है, जिससे यहाँ के लोगों को जल संकट का सामना करना पड़ रहा है।

काजा की ओर बढ़ते हुए, रास्ते में अचानक से मौसम बिगड़ गया। बादलों ने घेर लिया और बारिश के साथ बर्फबारी भी शुरू हो गई। रास्ते में ढलान से गिरते पत्थरों ने हमारे दिल की धड़कनें तेज कर दीं। लेकिन हम रुकने वाले नहीं थे। जैसे ही हम काजा पहुँचे, वहाँ का शांत वातावरण और आध्यात्मिकता ने हमारे मन को शांति दी।

हिमालय की गोद में बिताए गए ये पल हमें यह सिखाते हैं कि जीवन का हर पहलू-चाहे वह प्रकृति हो, समाज हो या अर्थव्यवस्था-संतुलन पर आधारित है। और यह संतुलन ही हमें एक स्थायी और समृद्ध भविष्य की ओर ले जा सकता है। जैसे ही हम शिमला की ठंडी हवा और देवदार के पेड़ों के बीच से गुज़रे, मन में रोमांच की एक लहर सी दौड़ गई। शिमला का घना जंगल, जिसमें देवदार, ओक और चीड़ के पेड़ होते हैं, यहाँ के वातावरण को शीतलता और हरियाली से भर देता है।

काजा में स्थित के मठ की ऊँची चट्टान पर स्थित भव्य संरचना देखी। यह मठ तिब्बती बौद्ध धर्म का प्रमुख केंद्र है, जो एक हजार साल से अधिक पुराना है और यहाँ की संस्कृति और परंपरा का प्रतीक है। हमने यहाँ के बाजारों में स्थानीय हस्तशिल्प, ऊनी वस्त्र, और तिब्बती कला के नमूने देखे, जो यहाँ की सांस्कृतिक धरोहर को दर्शाते हैं।

हमारी यात्रा के दौरान हमें लोसर, यानी तिब्बती नववर्ष के उत्सव के अनुभव भी सुनने को मिले। हमें बताया गया कि गाँवों में एक अद्भुत ऊर्जा और उत्साह का संचार हो जाता है। लोग पारंपरिक परिधानों में सजे-धजे, मठों में प्रार्थना करने जाते हैं। नाच-गाने और पारंपरिक संगीत के साथ,यह उत्सव हमारी यात्रा को और भी जीवंत बनाता है। लोसर के दौरान लोगों की आस्था और उनके धार्मिक अनुष्ठानों को देखना ऐसा अनुभव होता है, जो आत्मा को गहराई से छू लेता है। इसे अगली बार देखेंगे।

काजा से आगे बढ़ते हुए, हमने नाको का रुख किया। यह छोटा सा गाँव, जिसकी झील समुद्र तल से 3,662 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है, हमें एक अलग ही दुनिया में ले आया। नाको झील का पानी इतना साफ और शांत था कि उसमें आकाश का पूरा प्रतिबिंब देखा जा सकता था।

यहाँ का वातावरण इतना शांत और पवित्र था कि हमने कुछ समय यहाँ की शांति का आनंद लेते हुए बिताया। लेकिन इस क्षेत्र में भू-स्खलन और जलवायु परिवर्तन की चुनौतियाँ भी हैं, जिनसे इस प्राकृतिक धरोहर को खतरा हो सकता है। नाको की इस यात्रा ने हमें हिमाचल प्रदेश की प्राकृतिक सुंदरता का गहरा अनुभव कराया, लेकिन साथ ही इन स्थानों के संरक्षण की आवश्यकता का भी एहसास दिलाया।

लाहौल और स्पीति के इस कोल्डडेजर्ट क्षेत्र में स्थित पिनवैली नेशनल पार्क एक और प्रमुख आकर्षण है। यह नेशनल पार्क 675 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में फैला हुआ है और यहाँ की वनस्पति और जैव-विविधता के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ के वन्यजीवों में स्नोलेपर्ड (हिम तेंदुआ), साईबेरियनआईबेक्स, तिब्बती वुल्फ और हिमालयीमार्मोट प्रमुख हैं।

पिनवैली में यात्रा करते समय हमें इस क्षेत्र की अनूठी वनस्पति भी देखने को मिली। यहाँ की वनस्पति में सीबक्कथोर्न प्रमुख है, जो इस क्षेत्र की कठोर परिस्थितियों में जीवित रहती है। इस पौधे के फल विटामिन सी से भरपूर होते हैं और इसका उपयोग औषधीय उत्पादों और स्वास्थ्य वर्धक पेय बनाने में किया जाता है। यहाँ के लोग इसे लेह बेरी के नाम से जानते हैं और इसका उपयोग पारंपरिक चिकित्सा में भी करते हैं।

नाको की यात्रा के दौरान हमें कई छोटे और बड़े झरनों का भी अनुभव हुआ, जो हिमालय के हृदय से निकलते हैं और इस क्षेत्र की प्राकृतिक सुंदरता को और भी बढ़ा देते हैं। इन झरनों का पानी बर्फ की तरह ठंडा था, जो सीधे हिमालय की बर्फ से पिघलकर आता है।

इन झरनों के बीच, हम चांगो झरना पहुँचे, जो नाको के निकट स्थित है। यह झरना न केवल पर्यटकों के लिए एक आकर्षण का केंद्र है, बल्कि स्थानीय लोगों के लिए जल का एक महत्वपूर्ण स्त्रोत भी है। लेकिन यह भी ध्यान देने योग्य है कि इन झरनों का प्रवाह भी जलवायु परिवर्तन के कारण प्रभावित हो रहा है, जिससे इस क्षेत्र के जल स्त्रोतों पर दबाव बढ़ता जा रहा है।

पिनवैली में रात गुज़ारना एक और अद्भुत अनुभव था। हिमालय की ऊँचाइयों पर, ठंडी रात में जब आसमान तारों से भरा हुआ था, हमने एक अद्वितीय शांति का अनुभव किया। यहाँ की रातें इतनी शांत होती हैं कि बस प्रकृति की हल्की आवाज़ें ही सुनाई देती हैं। हम सभी ने ठंडी रात में आग जलाकर गरमागरम चाय पी और आसमान में बिखरे तारों को निहारते हुए इस बात का एहसास किया कि हम कितने भाग्यशाली हैं, जो इस अद्वितीय स्थान पर हैं।

इस यात्रा के दौरान हमें कुछ चुनौतियों का भी सामना करना पड़ा। जैसे कि अचानक मौसम का बदलना और सड़कों की खराब हालत। ऊँचाई के कारण साँस लेने में भी कभी-कभी परेशानी होती थी। एक बार, ढलान से गिरते पत्थरों के कारण हमें कुछ समय के लिए रुकना पड़ा। लेकिन इन सभी चुनौतियों ने हमें यह सिखाया कि हिमालय की यात्रा केवल एक पर्यटन यात्रा नहीं होती, बल्कि यह एक जीवन का पाठ भी है, जहाँ हर कदम पर आपको अपनी धैर्य और संकल्प की परीक्षा देनी होती है।

पूह, काजा, और नाको जैसे इलाकों में पर्यटन बढ़ रहा है, जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्था को तो फायदा हो रहा है, लेकिन पर्यावरण पर इसका नकारात्मक प्रभाव भी पड़ रहा है। 2018 में, हिमाचल प्रदेश में पर्यटकों की संख्या 1.7 करोड़ तक पहुँच गई थी, जो राज्य की आबादी से अधिक है।

पर्यटन से होने वाले लाभों के साथ-साथ इसके नकारात्मक प्रभावों का भी ध्यान रखना आवश्यक है। अधिक पर्यटकों के आने से कचरे की समस्या बढ़ रही है, और स्थानीय संसाधनों पर दबाव भी बढ़ रहा है। इसके अलावा, इन इलाकों में हो रहे निर्माण कार्य और सड़क विस्तार भी पर्यावरण के लिए एक चुनौती बने हुए हैं। हमारी इस यात्रा का अंत हुआ। हमने अपने घर की ओर रुख किया। यह यात्रा न केवल हिमाचल प्रदेश की प्राकृतिक सुंदरता को देखने का अवसर थी, बल्कि एक ऐसा अनुभव भी थी, जिसने हमें इस क्षेत्र के पर्यावरणीय, सामाजिक, और आर्थिक पहलुओं से गहराई से परिचित कराया। हिमालय की गोद में बिताए गए ये पल हमें यह सिखाते हैं कि जीवन का हर पहलू-चाहे वह प्रकृति हो, समाज हो या अर्थव्यवस्था-संतुलन पर आधारित है। और यह संतुलन ही हमें एक स्थायी और समृद्ध भविष्य की ओर ले जा सकता है।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ. दीप नारायण पाण्डेय
(भारतीय वन सेवा से सेवानिवृत्त; वर्तमान में अनेक विश्वविद्यालयों में विजिटिंग प्रोफेसर)
(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं)

सरकार स्वयं अतिक्रमण में लिप्त; राजकीय भूमि का संरक्षण कैसे होगा

सुचित्रा आर्य

आबादी क्षेत्र विस्तार आज के समय की प्राथमिक आवश्यकता है लेकिन सरकारें इतने संवेदनशील मुद्दे पर उदासीन है। वहीं राजनैतिक दलों को जमीन आवंटन को लेकर सरकारों में जबरदस्त स्फूर्ति देखने को मिलेगी। आज़ादी के बाद जनसंख्या 4 गुना बढ़ी है लेकिन अधिकांश ग्राम पंचायतों का आबादी क्षेत्र यथावत पड़ा है अपवाद स्वरूप आंशिक क्षेत्र को छोड़कर आबादी विस्तार नगण्य ही है। आवासीय भूमि की अनुपलब्धता अतिक्रमण को बढ़ावा देती है।

ग्रामीण क्षेत्रों में भूमिहीन परिवारों के पास राजकीय भूमि के अतिक्रमण के अतिरिक्त अन्य कोई विकल्प ही नहीं है। वे स्थाई आवासीय पट्टे नहीं होने के चलते सरकार की योजनाओं से भी वंचित रहते हैं। उन्हें दोहरी मार पड़ रही है; अभावग्रस्त जीवन में अभाव ही अभाव।

अतिक्रमण को लेकर जो विगत कार्यवाही हुई है वो अव्यवहारिक, अस्पष्ट थी! उनमें बड़ा लक्ष्य एवं दृष्टीकोण नजर नहीं आएगा। अधिकांश कार्यवाहियों में कोर्ट आदेशों की पालना कर प्रशासनिक राहत पाने तक ही सीमित थी। सरकार का स्वभाविक दायित्व भी बनता है कि वह राजकीय भूमि को संरक्षण प्रदान करे लेकिन सरकार स्वयं ही अतिक्रमण करें तो वो किस मुँह से राजकीय भूमि के संरक्षण का दावा कर सकती है?

आज की तारीख़ में यदि कब्जे शुदा भूमि का भौतिक सत्यापन होगा तो तक़रीबन 20 प्रतिशत भूमि ऐसी निकलेगी जहाँ सरकार के स्वयं का अतिक्रमण है। अधिकांश ग्राम पंचायतों के राजकीय संस्थान जैसे अस्पताल, विद्यालय, सहकारी समिति कार्यालय, नंदीशाला इत्यादि। जैसे संस्थान गोचर, जोड़ पायतन पर अतिक्रमण शुदा मिलेंगे। बिना भौतिक सत्यापन के जनता के टैक्स के पैसे से राजकीय भवनों को विधि विरुद्ध अनाधिकृत जमीन पर खड़ा कर दिया जिनका भविष्य अंधकार मय है ! विडंबना देखिए सरकार के पास लैंड रिकॉर्ड, भरपूर मानवीय संसाधन, मशीनरी है इसके बावजूद इतने बड़े पैमाने पर अनाधिकृत भवन खड़े कर दिए। क्या सरकारों का ये कृत्य गैर कानूनी नहीं है? जब सरकारे ही ग़ैर कानूनी कार्य को अंजाम दे रही है तो कानून की पालना का आम आदमी पर विपरीत प्रभाव ही पड़ेगा। विगत वर्षों का अध्ययन करेंगे तो पायेंगे अतिक्रमण की अधिकांश कार्यवाही रास्ते और मार्ग अवरुद्ध सबंधी ही की गई है जो कि आमजन के आवागमन को सुचारू और व्यवस्थित बनाए रखने के लिए अति आवश्यक भी है। आवासीय अतिक्रमण के मामले प्रत्येक ग्राम पंचायत में मिलेंगे जहां कुछ जगह पंचायत की भूमि पर अतिक्रमण है, कुछ जगह गोचर भूमि है, कुछ जगह वन भूमि हैं (जिनमे सबसे सर्वाधिक पेचीदगिया है) मामलों के तह तक जाएँगे तो पाएंगे कि यही वन भूमि 1998-99 से पूर्व ग्राम पंचायत की या गोचर/ओरण भूमि थी लेकिन तत्कालीन सरकार ने प्रारम्भिक तौर पर ये मानते हुवे कि ग्राम पंचायत की जमीन को अस्थाई रूप से वन विभाग के अधीन कर दिया था कि जोड़पायतन, गोचर, सिवायचक के डवलपमेंट पर ग्राम पंचायतें ध्यान नहीं दे रही है जिसके चलते एक बड़ी भूमि बंजर और विरान पड़ी है। हालांकि ये कार्य बिना भौतिक सत्यापन हुआ जिसके चलते अधिकांश ग्राम पंचायतों का कुछ हिस्सा जिस पर लोगों की पहले से बसावट थी वो हिस्सा भी वन विभाग के अधीन हो गया जिसे प्रशासनिक लापरवाही कहे तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। जिसका खामियाज़ा आज लोगों को भुगतना पड़ रहा है।

इसके अलावा बसावट के अतिरिक्त वृक्षारोपण और डवलपमेंट की जिस मंशा से वन विभाग के अधीन किया गया था वो ज़मीन आज 25-30 वर्ष गुजरने के बाद भी बंजर और विरान पड़ी है। सरकार को ऐसी ज़मीन को चिन्हित करना चाहिए जहाँ आबादी पहले बसी बाद में वन भूमि में रूपांतरित किया गया था क्योंकी अधिकांश घर टूटने के मसले भी इसी से सबंधित निकलेंगे। इन मसलों के समाधान के लिए वैकल्पिक रास्ते तलाशने होंगे जैसे वैकल्पिक राजकीय भूमि को रूपांतरित करके कुछ निश्चित मानक तय करके आबादी भूमि का विस्तार करते हुवे यथा सम्भव लोगों के घरों को टूटने से बचाया जा सकता है। व्यवसायिक अतिक्रमण भी बड़ी चुनौती है राजनैतिक संरक्षण की पनाह में बेतहाशा बढ़ा है; जो कि सरकारी संपति का दुरुपयोग है। सरकार स्वयं अतिक्रमण में लिप्त है तो ऐसे में राजकीय भूमि का संरक्षण कैसे होगा?

सरकार को राजकीय भूमि के संरक्षण के लिए प्रदेशव्यापी भौतिक सत्यापन करना चाहिए जिसमें ये चिन्हित करे कि अतिक्रमण किस श्रेणी का है। अतिक्रमण रिहायशी है, व्यवसायिक है या सरकारी है या फिर रास्ते अवरुद्ध अतिक्रमण है। इसे अलग अलग चिन्हित करने से राजकीय भूमि को संरक्षण प्रदान करने में मदद मिल सकेगी। आबादी भूमि विस्तार नीति की भी आवश्यकता है जिसमें निश्चित मानक स्थापित करके जनसंख्या के अनुपात में आबादी क्षेत्र का विस्तार हो जिसमें आमजन की आर्थिक स्थिति के अनुपात में भी आवासीय सुरक्षा एवं सुनिश्चता परिलक्षित हो।

–सुचित्रा आर्य,
(पूर्व विधायक)

मालपुरा में बेसकीमती जमीनों को पालिका सफाई ठेकेदार ने डम्पिंग यार्ड बनाया

सफाई ठेकेदार द्वारा कचरे की आड़ में भूमाफियाओं को पनपाने का प्रयास किया जा रहा है

मालपुरा, (निसं)। मालपुरा शहर से रोजाना बड़ी तादात में एकत्रित किये जा रहे सूखे व गीले कचरे को एकत्रित कर सफाई ठेकेदार द्वारा पालिका के अधिकृत डम्पिंग यार्ड में डालने के बजाय शहर की प्रमुख सड़कों के किनारे रिक्त पड़ी करोड़ों रूपयों की बेसकीमती जमीनों पर कचरे के ढेर लगाने से शहर का सौन्दर्यकरण तो बदरंग हो ही रहा है साथ ही कचरे की आड़ में भूमाफियाओं को पनपाने का प्रयास किया जा रहा है।

शहर के 35 वार्डों से प्रतिदिन दर्जनों ऑटोकीपर व ट्रैक्टरों के माध्यम से कचरा संग्रह कर टोडारोड के पास कल्याणपुरा रोड पर पालिका की तकरीबन 20 बीघा जमीन पर आरक्षित डम्पिंग यार्ड में कचरा डालने का प्रावधान है, लेकिन सफाई ठेकेदार निश्चित स्थान पर कचरे को डालने के बजाय भूमाफियाओं से मिलकर मुख्य सड़क किनारे कचरे के ढेर लगा गड्डों में तब्दील जमीन का समतलीकरण करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। सूत्रों की माने तो ऑटोकीपर व ट्रैक्टरों में डीजल की खपत उतनी ही दर्शाई जा रही है जितनी कल्याणपुरा रोड पर डम्पिंग यार्ड तक के वाहनों के फेरों में लगता है। सफाई ठेकेदार व वाहन चालक एक तीर से दो शिकार कर रहा है। राजकोष से प्रतिमाह वाहनों में डीजल के नाम पर लाखों रूपयों का खर्च दर्शाया जा रहा है।

मालपुरा शहर के अजमेर रोड पर मुख्य सड़क किनारे करोड़ों रूपये की बेसकिमती जमीन पर कचरा डाला जा रहा है।

अजमेर रोड पर मुख्य सड़क किनारे बड़े भाग में रिक्त पड़ी करोड़ों की जमीन पर डाले जा रहे कचरे के ढेर अब सड़क पर फैल गये है, जिनसे उठती दुर्गन्ध से राहगीरों का निकलना भी मुश्किल हो रहा है। कई भूमाफिया इस जमीन पर अपनी गतिविधियां शुरू कर रहे हैं। कमोबेस यही हाल घाटी रोड, केकडी रोड, गुर्जर छात्रावास के पास, सरकारी अस्पताल के पिछवाड़े का है, जहां भी सरकारी जमीन पर अनाधिकृत रूप से कचरा डालकर शहर का सौन्दर्य बिगाड़ा जा रहा है। इन कचरे के ढेरों की आड़ में भूमाफिया अपने नापाक मनसुबों को अंजाम दे रहे हैं। पालिका में पिछले आठ महीनों से स्थाई ईओ पदस्थापित नहीं होने तथा अन्य पदों पर भी जिम्मेदार अधिकारियों की नियुक्ति नहीं होने के चलते शहर की व्यवस्थाएं चरमरा रही है। वहीं शहर में सरकारी जमीनों पर अंधाधुंध कब्जे व निर्माण की भी गतिविधियां चल रही है।

- **पालिका की तकरीबन 20 बीघा जमीन पर आरक्षित डम्पिंग यार्ड में कचरा डालने का प्रावधान है**
- **कचरे के ढेर से उठती दुर्गन्ध से राहगीरों का निकलना भी मुश्किल हो रहा है**

कार्यशाला में ट्रांसजेंडर को नए कानूनों की जानकारी दी

- **ट्रांसजेंडर के अधिकारों पर कार्यशाला का आयोजन**

अजमेर, (कासं)। ट्रांसजेंडर के अधिकारों पर शनिवार को पुलिस लाइन सभागार में कार्यशाला का आयोजन हुआ। कार्यशाला में अजमेर रेंज के पुलिस अधिकारी, थाना अधिकारी और ट्रांसजेंडर नोडल ऑफिसर सहित अजमेर के ट्रांसजेंडरों ने भाग लिया।

एसपी देवेंद्र कुमार विश्नोई ने बताया कि पुलिस में आयोजित ट्रांसजेंडर कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य ट्रांसजेंडर समुदाय को समान अधिकार प्रदान करना और भेदभाव को समाप्त करने के लिए नए नियम और कानूनों की जानकारी प्रदान करना रहा। एसपी ने बताया कि कार्यशाला में अधिकारियों को ट्रांसजेंडर समुदाय के अधिकारों के प्रति संवेदनशील बनाने और उन्हें मौजूदा कानूनी प्रावधानों से अवगत कराने पर बल दिया गया। एसपी विश्नोई ने कहा कि इस पहल से समाज में समानता और न्याय सुनिश्चित करने के प्रयास को और मजबूती मिलेगी। कार्यशाला के दौरान अधिकारियों ने सरकार के स्तर पर किए जा रहे प्रयास, इनके लिए सरकार की योजनाओं सहित विभिन्न मुद्दों पर विस्तार से चर्चा की गई। ट्रांसजेंडर बच्चों की पढ़ाई पर चर्चा की गई। नोडल अधिकारी अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक दुर्ग सिंह राजपुरोहित ने बताया कि सरकार की ओर से उन्हें ओबीसी का दर्जा दिया है। उन्होंने कहा कि बच्चों को स्कूली शिक्षा प्रदान करें, ताकि बड़े होकर वह भी समाज की मुख्यधारा में शामिल हो सकें।

ट्रांसजेंडर से किया संवाद :-

कार्यशाला के दौरान पुलिस अधिकारियों ने ट्रांसजेंडर से संवाद भी किया। उनकी समस्याओं को सुना गया। ट्रांसजेंडर ने बताया कि समाज में कई तरह के लोग हैं, कोई उन्हें गलत नजर से देखता है और भद्दे कमेंट्स करते हैं, लेकिन कई ऐसे भी लोग हैं जो उन्हें सम्मान देते हैं। ट्रांसजेंडर ने कहा कि समाज में परिवारों को समझना होगा कि यदि उनके घर में कोई ट्रांसजेंडर बच्चा है तो उसे समाज से छुपाकर नहीं रखें। उनके पास ऐसे बच्चे 14 से 15 साल की उम्र में आते हैं, ऐसे में उनकी शिक्षा प्रभावित होती है।

आवारा श्वानों के आतंक से लोग परेशान

पाटन, (निसं)। निकटवर्ती ग्राम पंचायत रायपुर-पाटन में आवारा कुत्तों के आतंक से परेशान ग्रामीण शनिवार को मुख्य बाजार बंद कर सड़क पर धरने पर बैठ गए। धरने पर बैठे ग्रामीण प्रशासन से आवारा कुत्तों से निजात दिलाने की मांग करने लगे। ग्रामीणों का कहना है गांव में आवारा कुत्तों का बहुत ज्यादा आतंक है। आए दिन आवारा कुत्ते लोगों को काटते रहते हैं। कुछ दिन पूर्व ही करीब 20 लोगों को एक साथ कुत्तों ने काट लिया था, जिसमें दो घायल लोगों की उपचार के दौरान मौत हो चुकी है। कुत्ते के काटने से एक गाय भी भडक गई है, जिससे ग्रामीणों में भी भय बना हुआ है।

राशिफल रविवार 1 सितम्बर, 2024

पंडित अनिल शर्मा

भाद्रपद मास, कृष्ण पक्ष, चतुरदशी तिथि, रविवार, विक्रम संवत 2081, अश्लेषा नक्षत्र रात्रि 9:49 तक, परिद्य योग सांय 5:50 तक, विष्टि करण रात्रि 4:31 तक, चन्द्रमा आज रात्रि 9:49 से सिंह राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-सिंह, चन्द्रमा-कर्क, मंगल-मिथुन, बुध-कर्क, गुरू-वृष, शुक्र-कन्या, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज यमघट योग रात्रि 9:49 से सूर्योदय तक है। भद्रा सांय 4:31 से आरम्भ होगी। आज मास शिवरात्रि, अघोरा चतुरदशी व्रत है। आज जैन पयुर्षण आरम्भ (पंचमी पक्ष) होंगे और आज प्रथम प्रकाश उत्सव गुरू ग्रन्थ साहिब है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 7:44 से 9:18 तक, लाभ-अमृत 9:18 से 12:27 तक, शुभ 2:01 से 3:35 तक।

राहूकाल: 4:30 से 6:00 तक। सूर्योदय 6:10, सूर्यास्त 6:44

मेष

घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं। अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

वृष

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। मित्रों/रिश्तेदारों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। आज नये-पुराने मित्रों से मुलाकात हो सकती है।

मिथुन
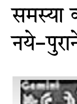
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आवश्यक कार्य के लिए बाहर जाना पड़ सकता है। आज धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

कर्क
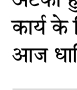
आवश्यक कार्य के लिए बाहर जाना पड़ सकता है। मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनःस्थिति में सुधार होगा। आज आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे।

सिंह
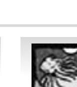
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। अनर्गल कार्यों में समय खराब होगा। मन में असंतोष बना रहेगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

कन्या
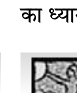
आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। महत्वपूर्ण कार्यों में प्रगति होगी। आवश्यक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है।

तुला
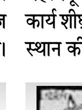
अपने आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। घर-परिवार में महत्वपूर्ण कार्य के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है।

वृश्चिक
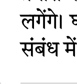
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। धार्मिक कार्यों में भाग सकते हैं। घर-परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा।

धनु
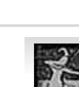
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। आज यात्रा टालना ठीक रहेगा।

मकर

परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं। महत्वपूर्ण कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी।

कुंभ
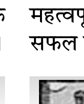
अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। घर-परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

मीन
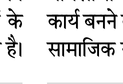
अपने आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। महत्वपूर्ण कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी। आज नये-पुराने मित्रों के साथ मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।